नगरधन-वैनगंगा क्षेत्र में पोवार(पंवार) राजपूतों का इतिहास

रामटेक के पास स्थित नगरधन के किले का इतिहास बहुत ही प्राचीन है । यह ऐतिहासिक किला दो हजार से भी अधिक वर्षों से अनेक राजवंशों के शासन का साक्षी रहा है साथ ही उनके गौरवशाली इतिहासगाथा का प्रतीक रहा है। नगरधन (नंदिवर्धन), विदर्भ की प्राचीन राजधानी थी जो नागपुर से लगभग चालीस किलोमीटर दूर स्थित है। आज भी इस किले के वैभव से प्राचीन गौरवशाली इतिहास को महसूस किया जा सकता है। १७०० के आसपास इस किले पर देवगढ़ के शासक शाह बुलंद बख्त का नियंत्रण था। राजा बुलंद बख्त बहुत ही दूरदर्शी राजा था और मुगलों के नियंत्रण से दूर होने के लिए इस क्षेत्र को उसने मजबूत सैनिक छावनी के रूप में विकसित कर नागपुर शहर की स्थापना की थी। उन्होंने महत्वपूर्ण उद्देश्य पूर्ति के लिए देश भर से क्षत्रिय योद्धाओं, सैनिकों, राजनायिकों, कारीगरों आदि को आमंत्रित कर इन क्षेत्रों में बसने के लिए प्रोत्साहित किया।

राजा बुलंद बख़्त ने सशक्त सेना बनाकर औरंगजेब के प्रभाव को इन क्षेत्रों से मुक्त कराने के लिए मालवा, राजपुताना और बुंदेलखंड के राजाओं से सैनिक सहायता मांगी और साथ ही अन्य क्षत्रिय योद्धाओं को अपनी सेना में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया। बुंदेलखंड के शासक छत्रसाल बुंदेला ने राजपूत योद्धाओं की विशाल सेना नगरधन भेजी थी। राजा छत्रसाल बुंदेला ने मालवा और राजपुताना के राजपूत सैनिकों की सहायता से बुंदेलखंड क्षेत्र के मुगलों को खदेड़ दिया था और शाह बुलंद बख़्त ने भी इसी प्रकार क्षत्रियों की मजबूत सेना तैयार कर औरंगजेब के प्रभाव को मध्यभारत में सीमित किया था। इसी सेना का नियंत्रण हमारे पुरखों के हाथों में था और उन्होने बड़ी वीरता से इस क्षेत्र से मुगलों के आधिपत्य को ख़तम करने में अपना पूरा सहयोग दिया।

राजपूतों की वीरता किसी से भी छुपी नही है और बुलंद बख़्त भी भली भांति उनके सामर्थ्य से परिचित थे इसीलिए उन्होंने राजपूतों को इस क्षेत्र में स्थायी रूप से बसने के लिए प्रोत्साहित किया। बख्त बुलन्द ने अपनी सेना में कई पद दिए और साथ में अनेक किलों के किलेदार भी नियुक्त किये। कुछ राजपूतों को जागीरदारी भी दी गयी थी ताकि वे स्थाई रूप से इस क्षेत्र में खुद भी बसकर अपने संबंधियों को भी

आमंत्रित कर मदद कर सके। अठाहरवीं सदी के आरंभ में मालवा, राजपुताना, बुंदेलखंड आदि क्षेत्रों से भारी संख्या में राजपूतों का सपरिवार आगमन इन क्षेत्रों में हुआ था।

सर्वप्रथम नगरधन और रामटेक तथा आसपास के क्षेत्रों में काफी समय तक ये लोग साथ-साथ रहे और मराठाओं के शासनकाल तक सभी राजपूत एक साथ रहे। मालवा में १३१० तक पंवार राजपूत राजाओं का शासन था और उसके बाद मुस्लिमों का शासन आने से मालवा से क्षत्रियों का विस्थापन शुरू हुआ। इसी प्रकार उत्तर भारत में मुस्लिम राजाओं के राज्यविस्तार के कारण कई राजपूत राजवंशों की सत्ता चली गयी और वे विस्थापित होते रहे। ये सभी आपस में जुड़े थे और अन्य क्षेत्रों के राजपूत तथा अन्य राजाओं की मदद अंदरूनी रूप से करते रहते थे।

बुंदेलखंड में राजपूतों के सत्ता वापसी में इन सैनिकों ने काफी सहायता की और लंबे समय तक बुंदेलखंड और उसके बाद इनका बड़ा समूह औरंगजेब के विरुद्ध संघर्ष में देवगढ़ शासक शाह बुलंद के सहयोग हेतु नगरधन नागपुर आ गए और शाह बुलंद बख़्त के अनुरोध पर नगरधन और आसपास के इलाकों में राजपूत स्थायी रूप से बसने लगें। वैसे तो इसमें अनेक कुल के राजपूत थे लेकिन इन्हें संयुक्त रूप से पोवार या पंवार राजपूत कहा गया। ब्रिटिश इतिहासकारों और अन्य लेखकों के साथ समाज के बुजुर्गों से इनके छत्तीस कुल साथ होने का इतिहास मिलता है लेकिन वर्तमान में वैनगंगा क्षेत्र में बसे इन पोवार(पंवार) राजपूतों के तीस कुल मिलते हैं। अन्य कुल शायद अपने मूल स्थान को वापस चले गए हो।

छत्तीस कुल के पोवार(पंवार) राजपूत सैकड़ो वर्षों से साथ-साथ रहे हैं और वे अपने समूह के अन्य कुलों में ही वैवाहिक संबंध करते रहे हैं। नागपुर में भोसले मराठाओं का शासन स्थापित होने के बाद भी इन राजपूतों ने उनको सैन्य सहयोग किया था। मराठों के अनेक सैन्य अभियानों में इन्होंने अनेक सफलताएं प्राप्त की थी। सन १७०० से १७६० के आसपास तक ये सभी नागपुर-नगरधन के आसपास एक साथ ही थे और यही वह समय था जब इनकी राजपुताना संस्कृति और मराठा संस्कृति का समन्वय हुआ। राजपूतों का यह सैन्य जत्था अपने कर्तव्य के किये कई स्थानों में स्थान्तरित हुए और उनकी बोली तथा रीति-रिवाजों में स्थानीय संस्कृतियों का भी प्रभाव पड़ा पर उन्होंने अपने मूल सनातनी क्षत्रिय धर्म को कभी नही छोड़ा और वें आज भी इसका पालन कर रहे हैं।

आज वैनगंगा क्षेत्र के पोवारों की अपनी एक विशिष्ट बोली है जिसे पोवारी(पंवारी) कहा जाता है। इस बोली के आज के स्वरूप का अध्ययन करें तो इससे इस छत्तीस कुल वाले पोवार(पँवार) राजपूतों के क्षेत्रवार विस्थापन का अंदाजा लगाया जा सकता है। सभी इतिहासकार और ब्रिटिश रिपोर्ट्स के साथ जनगणना संबधित दस्तावेजों में इन्हें पश्चिमी राजपुताना से आये प्रमार राजपूत माना गया है और उनकी प्राचीन नगरी धार को लिखा गया है।

मालवा- राजपुताना इनके मूल स्थान थे और बुंदेलखंड के साथ विदर्भ क्षेत्र में इनका विस्थापन हुआ इसलिए आज की पोवारी बोली, राजस्थानी, गुजराती, मालवी, बुंदेलखंडी और मराठी का समन्वित रूप देखने को मिलता है। भाषाविदों और भाषायी सर्वेक्षण दस्तावेजों से भी इस तथ्य की पुष्टि होती है। इस प्रकार पोवार राजपूतों की बोली पोवारी वास्तव में सिर्फ एक बोली न होकर इस समाज की संस्कृति का दर्पण है जो छत्तीस कुल के पंवारों के क्षेत्रवार विस्थापन और स्थानीय प्रभावों को दर्शाता है।

मालवा राजपुताना क्षेत्र में पंवार(परमार) राजवंश का लंबे समय तक शासन था और निश्चित ही उनके राजकरण और सैन्य भागीदारी पंवार राजपूत और उनके नातेदार, अन्य राजपूत कुलों के हाथों में रही होगी इसीलिये १३१० में राजा महलक देव पंवार के निधन के बाद विदेशी आक्रांताओ से आत्मरक्षा और जीवनव्यापन के लिए उन्होंने समूहों में विस्थापन किया। शाह बुलंद बख़्त के द्वारा इनको अपने क्षेत्र में स्थायी रूप से बसने के लिए प्रोत्साहित करने से इन्हें एक नया क्षेत्र मिल गया। हालांकि ग्यारहवीं सदी में महाराजा भोज के समय इन क्षेत्रों पर मालवा का नियंत्रण हो चुका था और ११०४ ईस्वी में उनके भतीजे लक्ष्मण देव पंवार नगरधन के शासक बने थे लेकिन उस समय इस क्षेत्र में पंवारों का आगमन सिर्फ सैन्य अभियानों तक ही सीमित रहा हो यह अनुमान लगाया जा सकता है। राजा लक्ष्मणदेव पंवार के भाई राजा जगदेव पंवार का भी इन क्षेत्रों पर नियंत्रण था और उन्होंने चंद्रपुर के गढ़चांदुर किले से दक्षिणी भारत पर विजय अभियान किया था। उनके पुत्र जगदेव पंवार द्वितीय भी इस क्षेत्र में शासक के रूप में रहे थे पर उनका और उनके वंशजों का इस क्षेत्र में और विस्तृत इतिहास अब तक अप्राप्त है।

पोवारों के भाट भी मालवा से ही थे और उन्होंने अपनी पोथियों में इनके अलग-अलग कुलों के मूल स्थान का उल्लेख कर नगरधन में आना लिखा है। पोथी में इन्हें मूल रूप से मालवा के परमार लिखा है और साथ में यह भी लिखा है कि इनके छत्तीस कुलों में अग्निवंशीय, चंद्रवंशीय और सूर्यवंशीय क्षत्रिय

सम्मिलित है। इससे इस बात की पुष्टि होती है कि वैनगंगा क्षेत्र के पोवार(पंवार), क्षत्रियों का एक संघ है जो लंबे समय से एक समुदाय के रूप में साथ-साथ रहे है और उनके कुल मूल रूप से ऐतिहासिक है जिनके मूल स्थान का भी भाटों ने पोथियों में उल्लेख किया है। इनके भाट स्व. श्री बाबूलाल जी ने वर्तमान में मिलने वाले सभी तीस कुलों की वंशावलियों को लिखा है। उनके पूर्वज भी इन पोवारों की वंशावलियों को लिखा करते थे और मालवा राजपुताना से पीढ़ी दर पीढ़ी साथ-साथ चलते रहे थे।

संभवतया पोवारों में शामिल सभी कुल मालवा के मूल पंवार वंश के काल से साथ मे रहे और बाद के कालक्रम में इनका हर क्षेत्र में विस्थापन और बसाहट एक साथ हुआ होगा तभी तो इनमें एक समान संस्कृति और बोली के दर्शन होते है जो अन्य समकक्ष क्षत्रियों से काफी भिन्न है। साथ ही इनके विवाह भी पोवारों में शामिल कुलों/सरनेमो में ही होते रहे है जो इस बात की पुष्टि करता है की ये क्षत्रिय समूह सैन्य जत्थे के रूप में सैकड़ो वर्षों से एक साथ रहे और अपने संस्कारों तथा बोली का संरक्षण कर पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित करते रहे।

पोवारी बोली का सिर्फ वैनगंगा क्षेत्र के पोवार(पंवार) समाज के द्वारा बोला जाना और कई ऐसे रीति-रिवाज जैसे दीपावली में डोकरी पूजा करना, गायखुरी वाले चौक का बनाया जाना, दूल्हा देव की पूजा, दसरे में बड़ी-मयरी के साथ देवघर की पूजा, चौरी का विशेष महत्व जैसे कई रीति-रिवाज सिर्फ पोवारी संस्कृति में देखने में आते हैं और ये अन्य कोई भी समकक्ष समाजों या अन्य राजपूत कुलों में देखने को नही मिला, जो इस तथ्य की पुष्टि करता है कि वैनगंगा क्षेत्र के ये पोवार शदियों से अपने कुलों में संगठित रूप से रहे है और अपनी बोली तथा संस्कृति को संरक्षित करते आये हैं।

समय के साथ इंसानों ने काफी विकास कर लिया और आज आधुनिकता के दौर में आजीवका के लिए तेजी से विस्थापन भी कर रहे है और इस परिवर्तन से पोवार समाज भी अछूता नही रहा है। देश-दुनिया के कई हिस्सों में समाज के सदस्य जाकर बस रहे है जिससे उन्हें नई संस्कृतियों और बोली-भाषाओं को सिखने का मौका मिल रहा है इसीलिए अब धीरे-धीरे पोवारी बोली को बोलने वाले भी कम हो रहे है और यह बोली अब बुजुर्गों तक सीमित नजर आ रही है। हालांकि अनेक साहित्यकार और सामाजिक विचारक इस पुरातन धरोहर के मूल रूप को सहेजने में लगे है जिसे सभी को मिलकर पूरा करना होगा।

संचार के माध्यमों ने आज देश के अनेक हिस्सों में रह रहे क्षत्रियों से मिलने का अवसर और सुविधा प्रदान की है जिससे अतीत के विषय में नित्य नवीन जानकारियां सहज भाव से मिल रही है। पुरखों की पुरातन धरोहरों से परिचित होने का अवसर मिल रहा है। समय के साथ इन सभी की अलग-अलग स्थानीय संस्कृतिया विकसित होकर ये जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुकी है जिन्हें अब मूल रूप में संरक्षित किया जाना आवश्यक है इसीलिए भिन्न अस्तित्व में विकसित संस्कृतियों का विलीनीकरण न करके उनके बीच सामंजस्य स्थापित किया जाना महत्वपूर्ण एवँ आवश्यक है।

वैनगंगा क्षेत्र के पंवारों की बहुतायत में जनसंख्या बालाघाट, भंडारा, नागपुर, गोंदिया और सिवनी जिलों में निवासरत है। इतने बड़े क्षेत्र में होने के बावजूद सभी पंवार(पोवार) समाज में साझा और एक सी संस्कृति आज भी कायम है। आज भी समाज की आधे से भी अधिक जनसंख्या अपने पूर्वजों की बोली, पोवारी बोलती या समझती है जिसे और प्रचार-प्रसार कर बढ़ाया जा सकता है साथ में समाज के युवाओं को पोवारी संस्कृति के परंपरागत मूल्यों और रीति-रिवाजों से परिचित कराया जा सकता है ताकि हमारी समृद्धशाली विरासत कायम रहे और पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होते रहे। इस प्रयास में सभी सामाजिक संस्थाओं का सहयोग आपेक्षित होगा जिससे पोवारी सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण और संवर्धन में मदद मिलेगी और समाज में दिन प्रतिदिन बढ़ते सामाजिक पतन को रोकने में मदद मिलेगी। समाज के सभी वर्ग अपने गौरवशाली अतीत से परिचित हो सकेंगे और यही परिचय भविष्य में समाजोत्थान हेतु प्रेरणा स्रोत बनेगा।

तथ्य संकलन : ऋषि बिसेन, बालाघाट

क्षत्रिय पंवार(पोवार) समाजोत्थान संस्थान, बालाघाट